भ्रष्टाचार विरोधी मुहिम और राजनीतिक संकट

एक सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

धीरूभाई शेठ से **मणींद्र नाथ ठाकुर** और **कमल नयन चौबे** की बातचीत

पिछला डेढ़ साल भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए संकट का समय रहा है। अण्णा हज़ारे, अरविंद केजरीवाल और बाबा रामदेव के नेतृत्व में चली भ्रष्टाचार विरोधी मुहिमों के कारण अभी तक किताबों में बंद रही सिविल सोसायटी की अभिव्यक्ति अचानक सामने आ गयी। घरों में आराम से बैठा रहने वाला शहरी मध्यवर्ग सड़कों पर निकल कर आंदोलनकारी मुद्रा अपनाने लगा। नेताओं, पार्टियों, विधायिका और गवर्नेंस की साख में तेज़ी से गिरावट हुई। इस परिस्थिति से उपजे सैद्धांतिक प्रश्नों पर वरिष्ठ राजनीतिक-समाजशास्त्री धीरूभाई शेठ से मणींद्र नाथ ठाकुर और कमल नयन चौबे ने दो बैठकों में अलग-अलग बातचीत की जिसमें नागरिक समाज, राज्य, राजनीतिक दल, गठजोड़ राजनीति, भूमंडलीकरण, लोकतांत्रिक व्यवस्था और समाज-चिंतन के बीच बन रहे पेचीदा संबंधों पर रोशनी पड़ी।

सामयिकी